Artistic Narration Vol. XVI No. 1 Jan.-June 2025 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 8.898 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.012

भारतीय संस्कृति की आधुनिकता में कला का योगदान

मूल चन्द वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (चित्रकला विभाग)
एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद
ईमेलः *moolchandv565@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 27.03.2025
Approved: 28.05.2025

मूल चन्द वर्मा

भारतीय संस्कृति की आधुनिकता में कला का योगदान

Artistic Narration 2025, Vol. XVI, No. 1, Article No.12 pp. 083-087

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.012*

सारांश

कला और संस्कृति के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। भारतीय संस्कृति के विकास में कलाओं का बहुत महत्वपर्ण योगदान रहा है। किसी भी देश के जन जीवन के आचार–विचार, धर्म, उत्सव, पहनावा, वेशभूषा, रहन–सहन आदि का व्यापक एवं सामूहिक नाम ही संस्कृति है। इसमें कलाओं सदैव अपना विशिष्ट स्थान होता रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति अनेक प्रादेशिक व आंचलिक संस्कृतियों से मिलकर बनी है। इन प्रदेशों या आंचलों की संस्कृतियों के विविध स्वरूपों का दर्षन वहाँ की प्रचलित कलाओं के माध्यम से होता हैं। मध्य प्रदेश में स्थित भीम बेटका व छत्तीसगढ़ की जोगीमारा की गुफाओं में बने शैल चित्र तत्कालीन सामाजिक जीवन व उनकी संस्कृति विरासत का परिचय कराते हैं। अजंता की गुफाओं के चित्र वाकाटक व गुप्त कालीन वेशभूषा, उत्सव, धार्मिक आस्था आदि के जीवंत उदाहरण है। इस यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कला एवं संस्कृति सदैव से एक दूसरे पर निर्भर रहे हैं।

मुख्य बिन्दु

कला संस्कृति, आधुनिक, जन साधारण, सांस्कृतिक विरासत, परम्परा,

मूल चन्द वर्मा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कला में आधुनिकता से तात्पर्य मानव की सहज वृत्ति से रचना अथवा नव निर्माण करना है। इस सहज वृत्ति के कारण ही मानव ने रूप सौंदर्य को कला एवं संस्कृति के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास निरन्तर करता रहा है। आधुनिक कला का प्रारम्भ किसी एक सर्वमान्य तिथि से निश्चित नहीं किया जा सकता है। 19वीं शताब्दी के मध्य का समय राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उथल–पुथल पूर्ण रहा है। जन साधारण की समाज में बढ़ती साझेदारी, अभिजात वर्ग का पतन, भौतिकवादी विकास, बड़े बाजारों का उदय तथा अन्य शक्तिशाली प्रभाव विद्यमान परम्पराओं को छिन्न–भिन्न करने मे सहायक थे। औद्योगिक प्रगति तथा तकनीकि विकास ने संस्कृति को प्रभावित व विकसित करने में योगदान दिया। मानव उत्पत्ति से ही कला और संस्कृति का आपस में अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अपनी आदिम अवस्था में जब मानव में समूह अथवा सामाजिकता का बोध भी न था तब भी वह आड़ी तिरछी किरम–कांटो जैसी रेखाएं खींच कर अपने शिकार को वश में करने का प्रयास कर रहा था। इस प्रकार हम पाते हैं कि कला और संस्कृति आपस में एक दूसरे से प्रभावित भी होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि संस्कृति में कला का प्रतिरूपण देखने को मिलता है और कला नए सांस्कृतिक मूल्यों को ढ़ालने का कार्य भी करती है। किसी भी देश की संस्कृति की जानकारी करके हम उस देश की कला के बारे में भी लगभग ठीक–ठाक अनुमान लगा सकते हैं। किसी भी देश के सांस्कृतिक विकास में कला का महत्वपर्ण योगदान होता है क्योंकि कला प्रारम्भ से ही समाज के बहुसंख्यक अशिक्षित वर्ग के लिए समझ का आसान माध्यम रही है। यह सामान्य मूल्य, प्रथा एवं एक निश्चित लक्ष्य को दिखाता है, इसमें सभी आर्थिक सामाजिक एवं रचनात्मकता का समावेश होता है। विविधताओं का देश भारत अपनी विभिन्न संस्कृतियों के लिए जाना जाता है। भारत का हर राज्य, हर प्रान्त लगभग अपनी एक अलग सास्कृतिक विरासत समेटे है।

भारत में गीत–संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, लोक परम्पराओं, कला–प्रदर्शनियों, धार्मिक सस्कारों, अनुष्ठानों एवं लेखन के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है। जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। जिसका उद्देश्य कला–प्रदर्शन, दर्शन एवं साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों एवं सांस्कृतिक संस्थानों को सहायता प्रदान करना है। आधुनिक भारतीय सस्कृति में कला का भी प्रमुख योगदान है जैसे–जैसे समाज में आधुनिकता आ रही है वैसे–वैसे ही भारतीय संस्कृति में बदलाव आता जा रहा है। सस्कृति में बदलाव के साथ–साथ कला में भी यही रूप देखने को मिलता है।

भारत अपनी जीवतं विविधता और वर्षो पुरानी विरासत के साथ, कला और संस्कृति का खजाना है। प्राचीन मन्दिरों की जटिलतम नक्काशी से लेकर शास्त्रीय संगीत की लयबद्ध ताल और पारम्परिक नृत्यों में रंगों के बहुरूप दर्शक तक, भारत की कला और सस्कृति का सार इसकी पहचान में गहराई से बुना हुआ है। आधुनिक भारतीय से आशय शहरी और खाते–पीते मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग से है, लेकिन इनमें भी कई तरह की समस्याएँ आती है। एक तो यह है कि पूरे भारत के शहरी एवं मध्यम वर्गीय समाज और उसके जीवन में निहित कला की अहमियत या मौजूदगी को लेकर भी कोई सरल या सर्वसम्मत निष्कर्ष निकालना बहुत ही कठिन है। सबसे पहला कारण ये है कि भारत की बहुसंख्यक आबादी की बनावट और बसावट में भी कई तरह के ऐतिहासिक अनुभव उपस्थित है। उत्तर प्रदेश का वाराणसी शहर भारत के प्राचीन शहरों में से एक है, और यहाँ के दैनिन्दिन जीवन में कई तरह के कला अनुभव आज भी सदियों से मौजूद रहे हैं। संगीत की पुरानी परम्परा आज भी यहां जीवित है और आधुनिक हिन्दी साहित्य की कई धाराएँ भी यहीं से निकलती

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.012

है। दूसरी तरफ कोलकाता या मुम्बई मुख्य रूप से औपनिवैशिक प्रक्रिया से प्रभावित शहर हैं और यहाँ भी कई तरह की कला प्रवृत्तियाँ सक्रिय रही है– उपनिवेशवाद के दौर में भी और आजादी के बाद के दौर में भी आज भी कोलकाता में प्रखर कला चेतना है। उसी तरह मुम्बई में भी उपनिवेशवाद के दौर में भी और आजादी के बाद के दौर में भी। आजादी के बाद भारतीय जीवन में शहरीकरण बढ़ा है, इससे तो कतई इकांर नहीं किया जा सकता है। पर जिस अनुपात में भारतीय समाज का शहरीकरण हुआ है क्या उसी अनुपात में या उसी के आसपास कला चेतना भी का विस्तार हुआ है?

भारत देश की असली पहचान उसकी विविध संस्कृतियों से है। भारत अपने गानों, संगीत, नृत्य, रंगमंच, लोक परम्पराओं, प्रदर्शनियों, कला सरोकारों, अनुष्ठानों और लेखन के लिए पूरे विश्व में 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप' में जाना जाता है। जो दुनिया में सांस्कृतिक विरासत के सबसे बड़े संग्रहों में से एक है। हम सब जानते हैं कि भारतीय कला और संस्कृति पूरी दुनिया में लोकप्रिय है और अपनी एक अलग भारतीयता की पहचान रखती है। प्राचीन काल से ही भारतीय कला और संस्कृति का आपसी रिश्ता भी काफी गहरा रहा है। कला हमेशा से संस्कृति की प्रवक्ता रही है। कला के माध्यम से ही संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन में अभिव्यक्ति पाती है। कला अपने समाज की घटनाओं व सांस्कृतिक सरोकारों के साथ ही आगे बढ़ती है। इसी कारण भारतीय समाज के विविध प्रान्तों की अभिव्यक्ति हमें कला के विविध रूपों में जीवंत होती दिखाई देती है।

1. फोटोग्राफी
2. साहित्य
3. संगीत
4. नृत्य
5. नाटक
6. नौटंकी
7. चित्रकला
8. मूर्ति कला
9. स्थापत्य कला
10. रंगमंच
11. सिनेमा आदि।

आधुनिक भारतीय कलाओं और भारतीय संस्कृतियों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। भारतीय संस्कृति के विकास में कलाओं का बहुत महत्वपर्ण योगदान रहा है। किसी भी देश के जन जीवन के आचार–विचार, धर्म, उत्सव, पहनावा, वेशभूषा, रहन–सहन आदि का सामूहिक नाम ही संस्कृति है। इसमें कलाओं का भी विशिष्ट स्थान होता है। हमारी भारतीय संस्कृति अनेक प्रादेशिक व आंचलिक संस्कृतियों से मिलकर बनी है। इन प्रदेशों या आंचलों की संस्कृतियों में वहाँ प्रचलित कलाओं के भी दर्शन होते हैं।

मध्य प्रदेश में स्थित भीम बेटका व छत्तीसगढ़ की जोगीमारा की गुफाओं में बने शैल चित्र तत्कालीन सामाजिक जीवन व संस्कृति का परिचय कराते हैं। अजंता की गुफाओं के चित्र वाकाटक व गुप्त कालीन वेशभूषा, उत्सव, धार्मिक आस्था आदि के जीवंत उदाहरण है। जन्मोत्सव, मुडन, यंज्ञोपवीत, विवाह, त्यौहार,

आदि भारतीय संस्कृति के ही अंग हैं। सतिया चौक परूना, अल्पना, एपण, अदूपना, मांडना, रंगोली आदि विविध रूपों में लोक चित्रकला भी विद्यमान है। इसी प्रकार नृत्य के विविध रूप प्रादेशिक संस्कृतियों की झलक दिखाते हैं। भारतीय संस्कृति, भारतीय कलाओं में झांकती नजर आती है। इस प्रकार हम पातें हैं कि भारतीय संस्कृति की लोकप्रियता बढ़ाने में कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जो आधुनिक काल में भी प्रचलित है। कलाएँ विविध धर्म व जाति के लोगों को एक साथ लाती है, और हमारी संस्कृति उनकी विविधता के साथ एक–दूसरे की सराहना करने में मदद करती है।

शिकार में सबकी सहभागिता को दर्शाते वर्ली के चित्र।

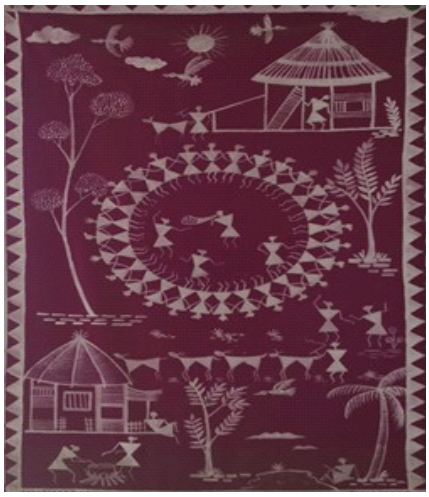

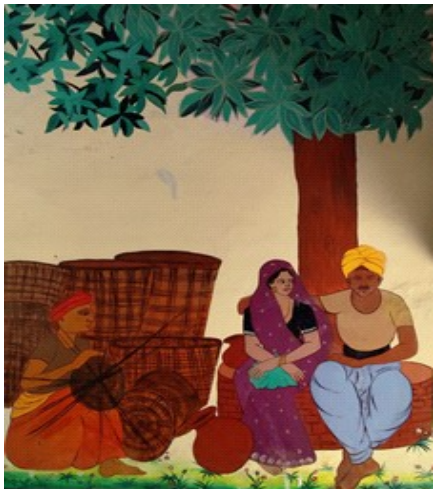

समाज के विविध कार्यकलापों को दर्शाते चित्र।

निष्कर्ष:–

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्कृति किसी भी समाज की परम्परा से मिली भौतिक व अभौतिक विरासत का नाम है। कला संस्कृति का ही हिस्सा होती है और कलाओं के माध्यम से ही कोई भी संस्कृति अपनी अभिव्यक्ति आम जनमानस के बीच प्रसार पाती है। अतः हम इसी कारण कलात्मक रूप में संस्कृति को देख और समझ पाते हैं। आजादी के बाद तेजी से भारतीय आम जनमानस में संस्कृति

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.012

एवं कला का लोकप्रिय स्वरूप बसना शुरू हुआ है। अभिजात्य वर्गो तक सिमटी कला को आम लोगो की स्वीकार्यता भी तेजी से मिली है। जिसके फलस्वरूप इसका विकास तेजी से संभव हो सका है। संस्कृति व कला को साथ लेकर चले बिना किसी भी देष का वास्तविक विकास संभव नहीं है।

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश रहा है जिसकी कीर्ति आज भी सारे विश्व में अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ विद्यमान रहा है। अखबार और पत्रिकाएँ किसी भी देश और समाज की जीवन्त धड़कती स्पंदन का दस्तावेज होते हैं। अखबारों व पत्र–पत्रिकाओं ने भारत की वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत व कला को सहेजने के साथ–साथ आम जनमानस तक इसे सही स्वरूप में पहुँचाने का भी काम पूरी तत्परता और लगन के साथ किया है। भारतीय संस्कृति की आधुनिकता में कला की भूमिका महत्वपर्ण रही है। दोनों एक–दूसरे के पूरक मानी जाती है तथा दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है। जो आज एक दूसरे के सहयोग से आधुनिक युग में अपना परिचम लहरा रही है।

सन्दर्भ

1. गुप्त, डॉ. ह्रदय नाथ **"देशज कला"** राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी राजस्थान। (2019)
2. भानावत, डॉ. महेन्द्र व 'जुगनू', डॉ. श्री कृष्णः **"भारतीय लोक माध्यम"** राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर। (2003)
3. गुप्त, डॉ० श्याम लाल, "सौंदर्य तत्व मीमांसा"। (1996)
4. समकालीन भारतीय कला, डॉ० ममता चतुर्वेदी। (2016)
5. आधुनिक भारतीय जीवन में कला एवं संस्कृति, रविन्द्र त्रिपाठी, रविवार डाइजेस्ट, मासिक पत्रिका।
6. https://www.bristo1247.com
7. https://www.Indiaculture.nic.in/hi